गुरु नानक – सबद ५

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

सार: लोग अपनी मनःस्थिति के अनुसार सर्वव्यापी चेतना के विविध पहलुओं के बारे में अपनी समझ व्यक्त करते हैं, जो कि जागरूकता के स्तर से जुड़ी होती है। उनकी धारणाएँ जीवन के अलग अलग समय के दौरान उनके अनुभव पर आधारित होती हैं, जो प्रकृति के नियमों के तहत नियंत्रित होती हैं।

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
जिन लोगों को सर्वव्यापी चेतना की शक्ति पर विश्वास है, वो इसका सहारा लेते हैं।

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

जो लोग सर्वव्यापी चेतना में विश्वास करते हैं वो सृष्टि की उदारता की तरफ़ अपना आभार व्यक्त करते हैं।

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

जिन लोगों ने सर्वव्यापी चेतना को अनुभव किया है वह इसके अलग अलग गुण व्यक्त करते हैं।

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

जिन लोगों ने आलोचनात्मक सोच के ज़रिए से सर्वव्यापी चेतना का ज्ञान प्राप्त किया है, वह इसकी सर्वव्यापकता का उल्लेख करते हैं।

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

जो लोग शारीरिक अस्तित्व की नज़ाकत को पहचानते हैं वो सर्वव्यापी चेतना को इसके निर्माता और विनाशक के रूप में मानते हैं।

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

जो लोग सर्वव्यापी चेतना की स्थिरता पर सोच विचार करते हैं, उनका कहना है यह शक्ति जीवन लेती है और देती भी है।

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

जिन लोगों ने अभी तक आत्म-चिंतन शुरू नहीं किया है, उनको सर्वव्यापी चेतना दूर दिखाई देती है।

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

जिनका प्रकृति से संबंध है, वो सर्वव्यापी चेतना की मौजूदगी को महसूस करते हैं।

कथना कथी न आवै तोटि ॥

सर्वव्यापी चेतना के बारे में बखानों की कोई कमी नहीं है।

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

असंख्य मान्यताएँ, दर्शन और उनके सूत्रधार हैं।

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

देने वाला दाता देता रहता है, और लेने वाला लेते-लेते थक जाता है।

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

आदि काल से साधक धारणाओं में लीन रहते हैं।

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥

सर्वव्यापी चेतना ज़िंदगी जीने के तरीक़े का अभ्यास करने के मार्ग की ओर ले जाती है।

नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

नानक कहते हैं कि वो निश्चिंत होने की आध्यात्मिक अवस्था में आनंद से खिल जाते हैं। (३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि विचारों, अनुभवों और हालात पर निर्भर करने की सीमा से परे जब कोई सर्वव्यापी चेतना के अनुसार बिना किसी आशंका के दुनयावी रास्ते पर चलता है, तो जीवन का सफ़र आनंद से भर जाता ।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com